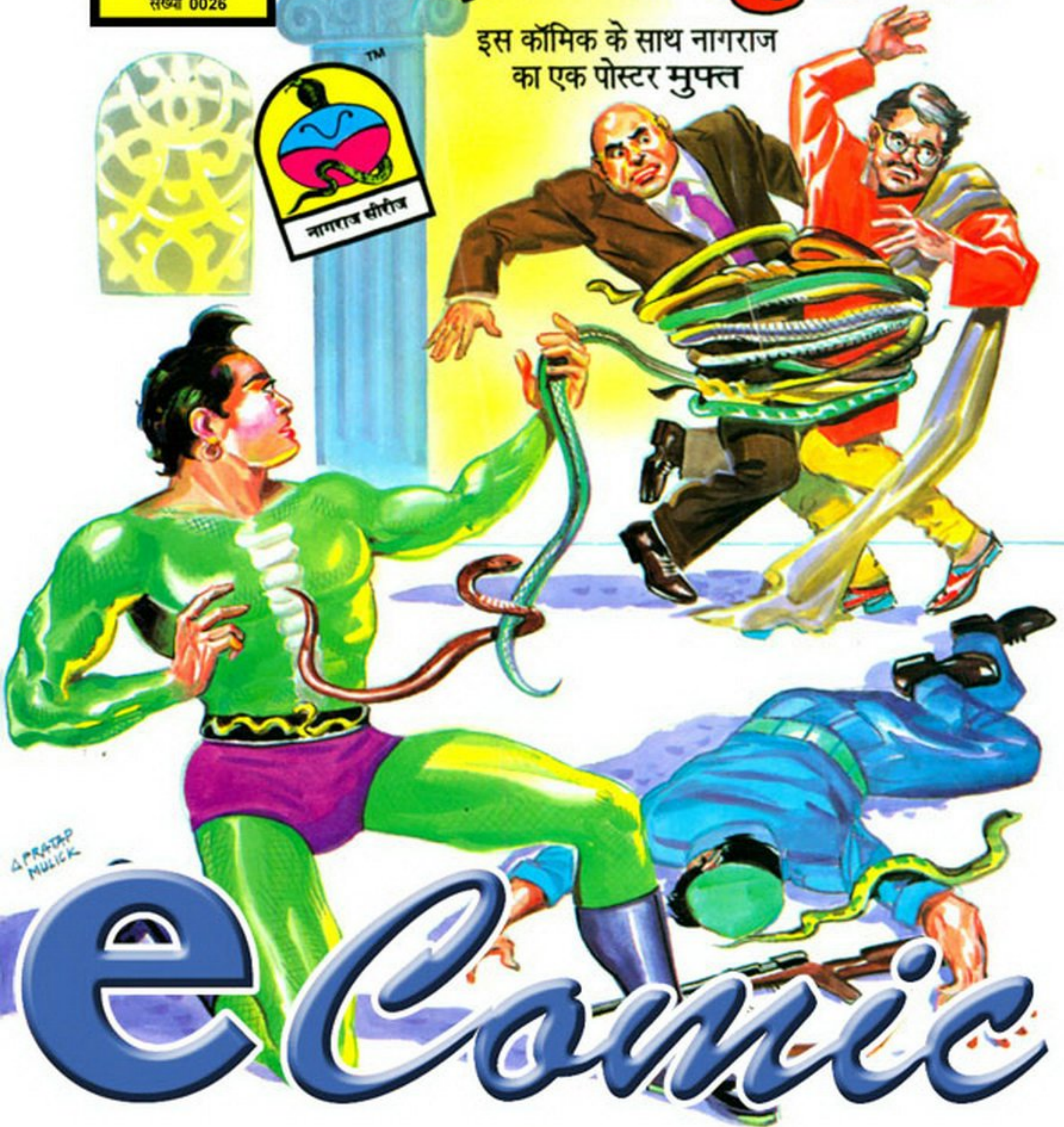




नागराज का बदला

इस कॉमिक के साथ नागराज
का एक पोस्टर मुफ्त



A PRADIP
MULICK

e-Comic

नागराज का बदला

चित्रकथा:
परशुराम शर्मा

चित्रांकन:
संजय अष्टपुत्रे

सम्पादन:
मनीष चंद्रगुप्त



उद्यर कम्पाली हिल के किले में मीटिंग चल रही थी।

और तुम्हारे हक में भी यह बात जाती है महामंत्री किल्लौल!

कम्पाली एक आजाद रियासत है और तीन देशों की सीमा इससे मिलती है - इससे बेहतर स्थान आपके लिये दूसरा कोई नहीं होगा मिस्टर बुलडाग!





इस मीटिंग में जितने भी लोग मौजूद हैं, वह कम्पाली रियासत के सर्वशक्तिमान व्यक्ति हैं और सब मेरे साथी हैं।

तुम लोग कम्पाली के राजघराने को क्यों नजर अंदाज कर रहे हो ?



राजघराना सिर्फ नाममात्र का है। रियासत की देख-भाल हमें ही करनी पड़ती है।



किल्लौल, मेरे दोस्त ! क्या तुम कम्पाली की प्रगति में मुझे साझीदार बनाना चाहते हो ?

आप ठीक समझे मिस्टर बुलडाग ! मैंने महाराजा से आपको यह भू-भाग इसी लिये दिववाया है क्योंकि आप यहां की विकासशील योजनाओं पर पूंजी लगायेंगे।



हम पूंजी लगाने के लिये तैयार हैं - उसकी रूप-रेखा हमने तैयार कर ली है। अभी तक हम यहां से सिर्फ अफीम का कारोबार कर रहे थे।...



...लेकिन अब हम यहां हथियारों की फैक्ट्री लगायेंगे, क्योंकि हथियार सबसे अधिक मुनाफे का धंधा है।...



और कम्पाली रियासत इस कारोबार में हमारी साझीदार होगी। इसके शेयर कम्पाली के बाजारों में फैलाना तुम्हारा काम होगा।...

नागराज का बदला



...और तुम्हारा बोनस अलग होगा। महामंत्री किल्लौल, कागजात पर हस्ताक्षर करवाना तुम्हारा काम होगा।

आल राइट! अब आप यह सब मुझ पर छोड़ दें।



मीटिंग समाप्त होने के बाद —

किल्लौल इस रियासत का महाराजा बनने का ख्वाब देख रहा है। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है... लेकिन इस काम की शुरुआत तब होगी जब महाराजा पूरी तरह मेरी मुट्ठी में आ जायेगा।



हमारे आदमी हेड क्वार्टर के मलवे से नागराज की लाश निकाल लाए हैं।

लाबूत को किले के स्ट्रांग रूम में पहुंचा दो।



कुछ देर बाद —

लाबूत स्ट्रांग रूम में पहुंचा दिया गया है सुपर बास!



डाक्टर सिमलो... तुम्हें नागराज के शव का पोस्टमार्टम करना है, और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करनी है। अब डेड बाडी के परीक्षण में कोई कोताही नहीं होनी चाहिये।...

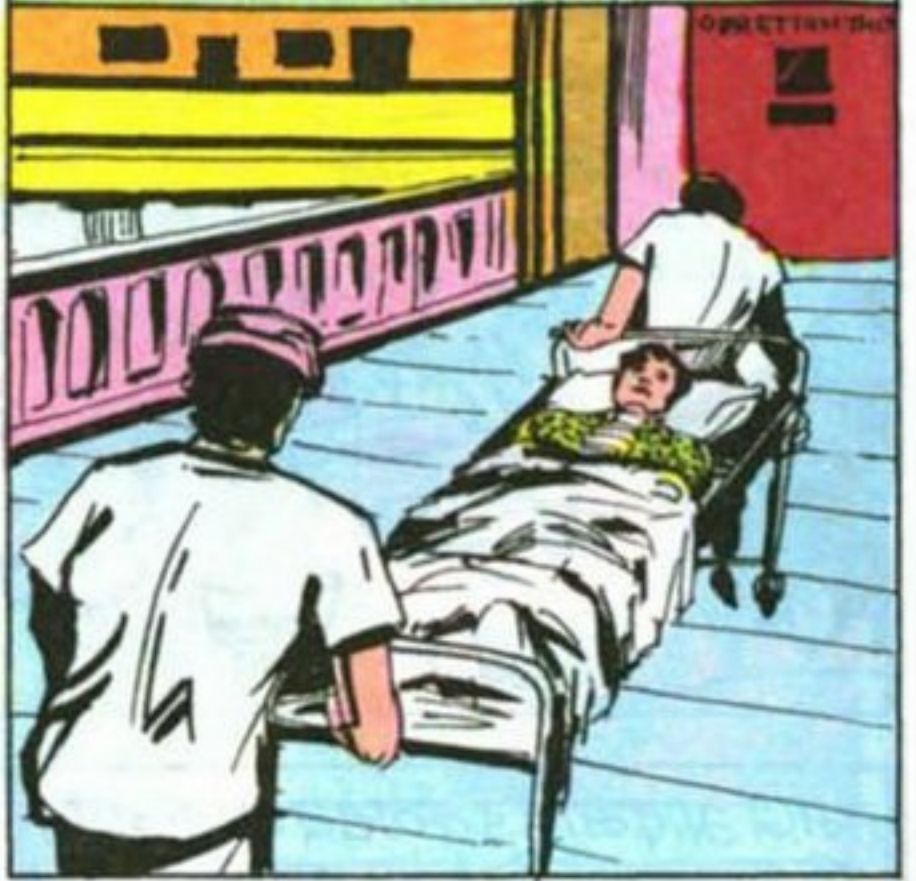


...हम नागराज जैसा ही आदमी तैयार करेंगे.. बशर्ते कि हमें उसकी आंतरिक क्रिया की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाये।

मैं आपका सार समझ गया... आप चिन्ता न करें मुझे इस काम का पूरा अनुभव प्राप्त है।

स्टांग रूम में डाक्टर सिमटो ने परीक्षण किया

नागराज को स्ट्रेचर द्वारा
आप्रेसन रूम में ले जाया गया।



आप्रेसन रूम में डाक्टर सिमटो
आप्रेसन के लिये तैयार था।

सबसे पहले
इसके ब्रेन का
आप्रेसन
होना चाहिये।

अगर मैंने इसके मुकाबले का
ऐसा ही शक्तिशाली मानव
तैयार कर दिया तो मैं सबसे
बड़ा दौलत मंद इन्सान
कहलाऊंगा।



नागराज की आंखें खुल गयीं और
सम्मोहन की एक प्रचंड लहर डाक्टर
सिमटो की आंखों की भेदनी चली गयी

उपफ
मेरी आंखों के
आगे अंधेरा घाता
जा रहा है, सिर
चकरा रहा
है।



नागराज का बदला





कुछ देर तैरने के बाद नागराज एक बस्ती में पहुँच गया-











बस्ती वालों ने नागराज को कंधों पर उठा लिया





उधर महामंत्री किल्लौन को पता चना—



किल्लौल ने नुरन्त बुलडागसे सम्पर्क किया-

नागराज मर चुका है... यह कोई और व्यक्ति है जो नागराज के नाम का लाभ उठा रहा है।

आपको पूरा यकीन है कि नागराज मर चुका है?

तुम्हें यकीन नहीं- लो अभी प्रमाण देता हूँ।

डाक्टर सिमलो तुम्हें यहाँ आओ।

नुरन्त ही डाक्टर सिमलो हाजिर हो गये।

मेरी रिपोर्ट को कोई चैलेंज नहीं कर सकता सुपर बास...

सुन लिया आपने मिस्टर किल्लौल यह किसी की साजिश है...!

हो सकता है महाराजा को तुम्हारी भोजना की गंध मिल गयी हो- और उन्होंने तुमसे निपटने के लिये नागराज का हव्वा खड़ा कर दिया हो।

मैं इस सम्बंध में अपने जासूसों को निर्देश दे चुका हूँ।...

...उनकी रिपोर्ट के अनुसार ऐसा कुछ नहीं है।

किसी तरह उसका हुलिया फोटो और काम करने का तरीका ज्ञात करो, उसके ठिकाने का पता लगाओ

किल्लौल के जासूस दिन-रात उसी काम पर लग गये।

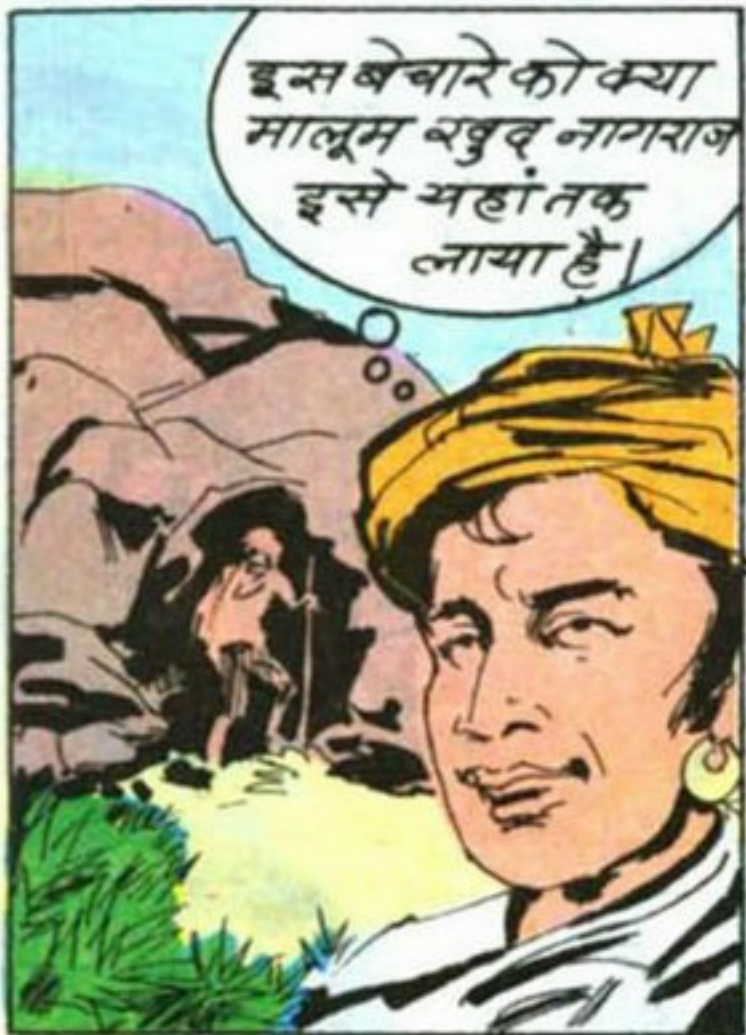
मैं बहुत गरीब आदमी हूँ- मेश धर-बार कुछ बदमाशों ने उजाड़ दिया... मैं नागराज की तलाश में भटक रहा हूँ। कोई मुझे उसका पता बता दो।



आओ, मैं तुम्हें नागराज से मिला दूँ मैं जानता हूँ वह कहाँ है।



इस गुफा में रहता है! अन्दर चले जाओ, वह तुम्हारी मदद जरूर करेगा।



इस बेबारे को क्या मालूम खुद नागराज इसे यहाँ तक लाया है।



बोलो, मैं ही नागराज हूँ मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?

हुजूर, माई - बाप मेरी रक्षा करें।

जासूस ने स्पाई कैमरे से नागराज का फोटो खींच लिया जो उसने पोशाक में छाली से लगाया हुआ था।

उसने नागराज को एक फर्जी कहानी सुना डाली।



ठीक है - मैं तुम्हारी झोपड़ी में दो दिन बिताने आऊंगा, और तुम्हारी छोटी लड़की वहीं रहेगी!

मैं लकड़हारा हूँ, जंगल में मेरी कुटिया है... कुछ बदमाश पहले मेरी जवान लड़की को उठाकर लेगये फिर...

जासूस वापिस किल्लौल के पास पहुंचा।

कल वह पोरवर के जंगल आ जायेगा। उसने दो दिन वहां रहने का वादा किया है... मैंने कहा था कि बदमाश मेरी बड़ी लड़की को उठाकर ले गये हैं और छोटी लड़की की फिराक में हैं।



और यह रहा उसका फोटो



अब देखा है वह पोरवर के जंगल से किस तरह निकल पाता है।

किल्लौल ने अपनी योजना तैयार कर ली।

हुजूर, सुवांगनी एक विषकन्या है जो मर्द किसी के काबू में नहीं आता, सुवांगनी उसे बड़े सलीके से परलोक पहुंचा देती है। आप बस हुक्म करें, बाकी काम सुवांगनी खुद कर लेगी।

लड़की सुवांगनी! तुम्हें उस लकड़हारे की छोटी लड़की बनकर जंगल की कुटिया में नागराज के साथ रहना है।



मुझे यकीन है बुगरासी, इसी लिये तुम्हारी सेवा प्राप्त की है - सुवांगनी का काम होगा नागराज को परलोक पहुंचाना।



और अगर सुवांगनी सफल न हो सकी तो तुम्हारी गुरिल्ला फौज उसे ठिकाने लगायेगी।



उसके बावजूद भी नागराज बच गया तो वह महाराजा का दुश्मन होगा - क्योंकि उस पर हमला करने वाला सरकारी फौज का दस्ता होगा।



नागराज पोस्वर से जंगल की ओर रवाना हुआ -

मैं कम्याली रियासत का दामन पाक साफ करके ही जाऊंगा।

वाह! मेरा अभिवादन कर रहे हैं।



शुवांगनी झोपड़ी के दरवाजे पर मौजूद थी।

क्या आप ही देवता नागराज हैं?



हां- तुम कौन हो?

एक अभागेलकड़हारे की बेटी... मेरे पिता की हत्या कर दी गयी। जब वे दम तोड़ रहे थे तो उन्होंने मुझे बताया कि आप हमें इन्साफ दिलायेंगे।

ओह! बदमाशों ने उनकी हत्या कर दी...?



वे इस तरफ शिकार खेलने के बहाने आते रहते हैं।

इस बार शिकार उनका होगा और शिकारी मैं।









मेरी छठी इन्ट्री ने स्वतरे की गंध पा ली थी।



पूरा जंगल फायरिंग की आवाज से दहल उठा।



यह तो सरकारी वर्दी के सैनिक हैं जो मुझे धेरकर मारने की कोशिश कर रहे हैं।





जैसे ही हेलीकाप्टर नीचे शुका और करीब आया, नागराज की नागरस्सी काप्टर पर लपक पड़ी।







महामंत्री किल्लौल निजी हेलीकाप्टर से बुलडाग के किले की ओर खाना होगा।

वह कम्पाली दर्रे के पुराने किले में उतरा।





इस रिपोर्ट और फोटो से इस बात की पुष्टि होती है कि वह नागराज ही है, ओ गॉड! ऐसा कैसे सम्भव है?



इसका मतलब उसने डाक्टर सिमलो को भी धोखा दिया! कमाल तो यह है कि हम शार्ट सर्किट टी.वी. पर डाक्टर सिमलो की शल्य क्रिया भी देख रहे थे...



...निश्चय ही नागराज राजमहल पहुंचेगा। किल्लौल तुम उससे सन्धिकर लो।

वह किस तरह, किन प्रस्तावों पर?



तुम उसपर जाहिर करो कि कम्पाली में बुलडाग नामक व्यक्तिने आतंक फैला रखा है और राजकीय फौजें भी उससे जा मिली हैं। मेरे मामले को लेकर वह तुम्हारे साथ होगा



उसे अपने विश्वास में ले लो - उसका स्वागत करो और फिर इस पुराने किले पर हमला कर दो...

बुनडाग ने किल्लौल को पूरी योजना समझा दी।

तुम यहा फतह पाओगे-
बस उसके बाद उसे
कम्पली में कोई
राजकीय पद दे दो,
और फिर... वह
होगा जो हम
चाहेंगे क्योंकि
वह हमारा
आदमी बन
जायेगा



किल्लौल वापिस राजमहल
पहुंच गया।



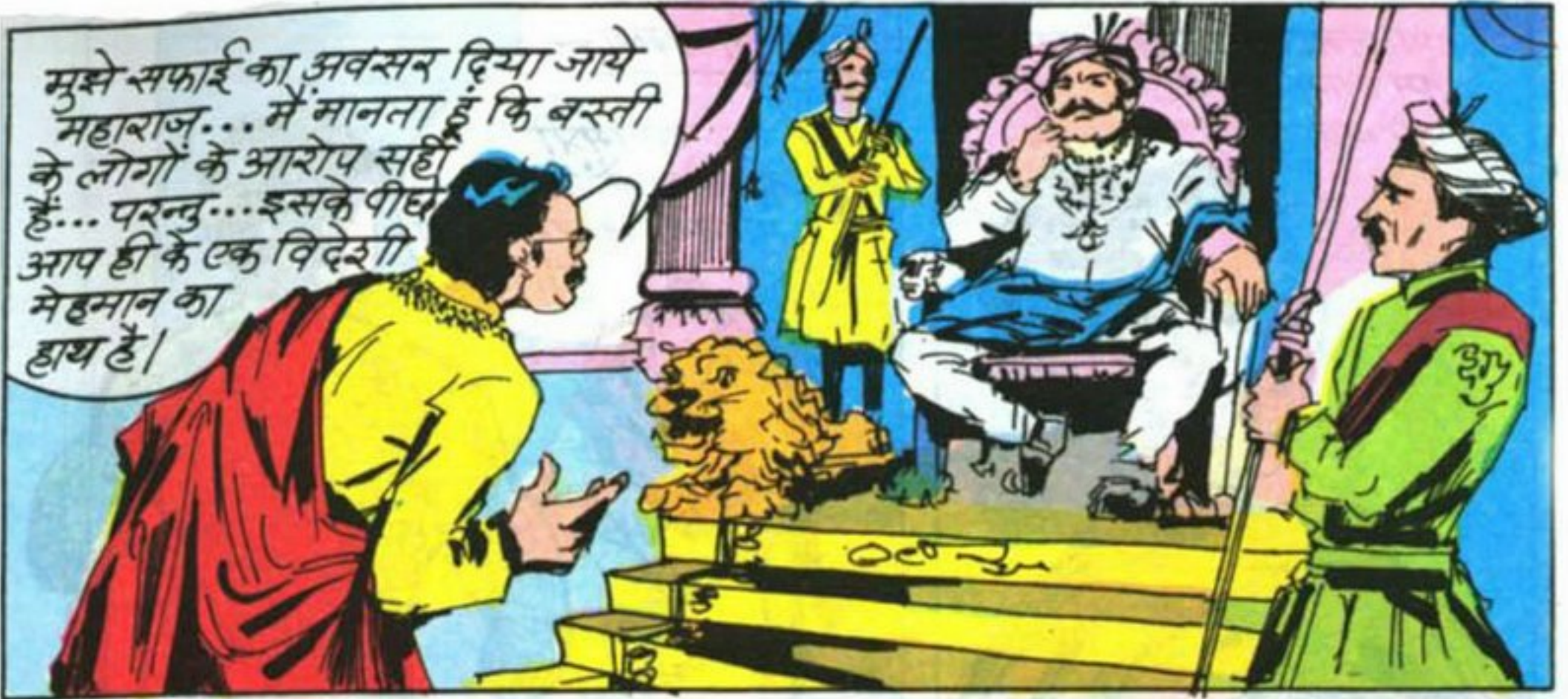
यह नगरवासियों
की भीड़ कैसी?

सब लोग महाराजा
से फरियाद करने आये
हैं और उनका नेतृत्व
नागराज कर रहा है!

तुरन्त ही किल्लौल दरबार में पहुंचा।

आइये महामंत्रीजी,
पधारिये और सुनिये यह
नगरवासी क्या-क्या
शिकायते लेकर आये
हैं, हमें इन बातों की कानों
कान खबर नहीं
हुई।









नागराज ने किल्लौल की योजना पर अमल किया।



नकली बुलडाग का रवात्मा कर
नागराज तीव्रता के साथ राजमहल
पहुंचा।

महाराज! आपको
इसी वक्त मेरे साथ
जलमहल चलना है!

क्यों?
क्या बात
है...?



आप खुद अपनी आंखों
से अपने महामंत्री के कारनामों
देख लें... तभी आपको
यकीन आयेगा।

ठीक है,
हम तैयारी
करते हैं।



इसकी जरूरत नहीं
महाराज - हम वहां
फनकारों के रूप में
पहुंचेंगे।



नागराज और महाराजा कौटिल
ने फनकारों का भेष धरा और
जलमहल की ओर रवाना
हो गये।



जलमहल में पहरेदारों ने उन्हें रोक लिया।



कुछ ही देर में -



नागराज महाराजा के साथ जहन हॉल में पहुंचा -







गधे के बच्चो! यह जादू नहीं हकीकत है... सिपाहियो, गिरफ्तार कर लो इन दोनों को।



यहां तुम्हारी नहीं मेरी आज्ञा चलती है महाराजा कोटिल... और तुम दोनों की मौत तुम्हें यहां खींच कर लाई है।

पकड़ लो... और कल्ल कर दो इन दोनों का।



ठारक



अब बताओ... शैकड़ों नागों ने तुम दोनों को जकड़ लिया... यह है तीसरा और आखिरी जादू...



ओह...!
बचो... महाराज



इसके जिस्म में बम फिट था और इसने बम की सेफ्टी पिन दबाकर आत्महत्या कर ली है।



बहादुर नौजवान नागराज... आज से रियासत तुम्हें सबसे बड़ा सम्मानित पद देती है।

नगर वासी नागराज की जय-जय कार के नारे लगा रहे थे।

नागराज की जय



समाप्त

अगले सैट में पढ़िए -

नागराज की हांगकांग यात्रा